एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 05 (नवम्बर-दिसम्बर, 2021)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सतावर की खेती: लाभ का सौदा

(*डॉ. अर्जुन लाल प्रजापत)
श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान- 303329
* prajapatasu@gmail.com

सतावर अथवा शतावरी भारतवर्ष के विभिन्न भागों में प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली बहुवर्षीय आरोही लता है। नोकदार पत्तियों वाली इस लता को घरों तथा बगीचों में शोभाकारी पादप के रूप में भी लगाया जाता है जिससे अधिकांश लोग इसे अच्छी तरह पहचानते हैं। सतावर के औषधीय उपयोगों से भी भारतवासी काफी पूर्व समय से परिचित हैं तथा विभिन्न भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में इसका सदियों से उपयोग किया जाता रहा है। विभिन्न वैज्ञानिक परीक्षणों में भी विभिन्न विकारों के निवारण में इसकी औषधीय उपयोगिता सिद्ध हो चुकी है अतः वर्तमान में इसे एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा होने का गौरव प्राप्त है। सतावर की पूर्ण विकसित लता 30 से 35 फुट तक ऊंची हो सकती है। प्राय मुख्य जड़ से इसकी कई लताएं एवं शाखाएं एक साथ निकलती हैं। यद्यपि यह लता की तरह बढ़ती है परन्तु इसकी शाखाएं काफी कठोर या लकड़ी के जैसी होती हैं। इसके पत्ते काफी पतले तथा सुइयों जैसे नुकीले होते हैं। इनके साथ–साथ इनमें छोटे–छोटे कांटे भी लगते हैं। जो किन्हीं प्रजातियों में ज्यादा तथा किन्हीं में कम आते हैं ग्रीष्म ऋतु में प्राय इसकी लता का ऊपरी भाग सूख जाता है तथा वर्षा ऋतु में पुनः नवीन शाखाएं निकलती हैं। सितंबर–अक्टूबर माह में इसमें गुच्छों में पुष्प आते हैं तथा तदुपरान्त उन पर मटर के दाने जैसे हरे फल लगते हैं। धीरे–धीरे ये फल पकने लगते हैं तथा पकने पर प्रायः लाल रंग के हो जाते हैं। इन्हीं फलों से निकलने वाले बीजों को आगे बिजाई हेतु प्रयुक्त किया जाता है। पौधे के मूलस्तम्भ से सफेद टयूबर्स का गुच्छा निकलता है जिसमें प्रायः प्रतिवर्ष वृद्धि होती जाती हैं औंषधीय उपयोग में मुख्यतः यही मूल अथवा इन्हीं टयूबर्स का उपयोग किया जाता है।

सतावर के प्रमुख औषधीय उपयोग

सतावर भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख औंषधीय पौधों में से एक हैं जिन विकारों के निदान हेतु इसका प्रमुखता से उपयोग किया जाता है वे निम्नानुसार है।

शक्तिवर्धक के रूप में:–विभिन्न शक्तिवर्धक दवाइयों के निर्माण में सतावर का उपयोग किया जाता है। यह न केवल सामान्य कमजोरी बल्कि शुक्रवर्धन तथा यौनशक्ति बढ़ाने से संबंधित बनाई जाने वाली कई दवाईयों जिसमें यूनानी पद्धति में भी प्रयुक्त किया जाता है। न केवल पुरुषों बल्कि महिलाओं के विभिन्न योनिदोषों के निवारण के साथ–साथ यह महिलाओं के बांझपन के इलाज हेतु भी प्रयुक्त किया जाता हैं इस संदर्भ में यूनानी पद्धति से बनाया जाने वाला हलवा एवं सुपारी पाक अपनी विशेष पहचान रखता है।

दुग्ध बढ़ाने हेतुः– माताओं का दुग्ध बढ़ाने में भी सतावर काफी प्रभावी सिद्ध हुआ है तथा वर्तमान में इससे संबंधित कई दवाइयां बनाई जा रही हैं। न केवल महिलाओं बल्कि पशुओं भैसों तथा गायों में दूध बढ़ाने में भी सतावर काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है।

चर्मरोगों के उपचार हेतुः– विभिन्न चर्म रोगों जैसे त्वचा का सूखापन एवं कुष्ठ रोग आदि में भी इसका बखूबी उपयोग किया जाता है।

शारीरिक दर्द के उपचार हेतुः– आंतरिक हैमरेजॉ गठियॉ पेट के दर्दों पेशाब एवं मूत्र से संबंधित रोगोॉ गर्दन के अकड़ जानोॅ पाक्षाघातॉ अर्धपाक्षाघातॉ पैरों के तलवों में जलनॉ हाथों तथा घुटने आदि के दर्द तथा सरदर्द आदि के निवारण हेतु बनाई जाने वाली विभिन्न औषधियों में भी इसे उपयोग में लाया जाता है।

सतावर काफी अधिक औषधीय उपयोग का पौधा है। यूं तो अभी तक सतावर की फसल की बहुतायत में उपलब्धता जंगलों से ही है परन्तु इसकी उपयोगिता तथा मांग को देखते हुए इसके कृषिकरण की आवश्यकता महसूस होने लगी है तथा कई क्षेत्रों में बड़े स्तर पर इसकी खेती प्रारंभ हो चुकी है जो न केवल कृषिकरण की दृष्टि से बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी काफी लाभकारी सिद्ध हो रही है।

सतावर की कृषि तकनीकः–

सतावर की कृषि तकनीक के प्रमुख पहलू निम्नानुसार है

उपयुक्त जलवायुः– सतावर के लिए गर्म एवं आर्द्र जलवायु उत्तम मानी जाती हैं प्रायः जिन क्षेत्रों का तापमान 10 से 50 डिग्री सेल्सियस के बीच हो वे इसकी खेती के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। इस प्रकार ज्यादा ठंडे प्रदेशों को छोड़कर सम्पूर्ण भारतवर्ष की जलवायु इसकी खेती के लिए उपयुक्त हैं विशेष रूप से मध्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों में यह काफी अच्छी प्रकार पनपता हैं। मध्यभारत के साल वनों तथा मिश्रित वनों मे एवं राजस्थान के रेतीले इलाकों में प्राकृतिक रूप से इसकी काफी अच्छी बढ़त देखी जाती है।

उपयुक्त मिट्टीः– सतावर का मुख्य उपयोगी भाग इसकी जड़ें होती हैं जो प्रायः 6 से 9 इंच तक भूमि में जाती हैं। राजस्थान की रेतीली जमीनों में तो कई बार ये डेढ़ से दो फीट तक लंबी भी देखी गई हैं। इसकी कंदिल जड़ों के विकास के लिए पर्याप्त सुविधा होनी चाहिए अतः इसके लिए आवश्यक है कि जिस क्षेत्र में इसकी बिजाई की जाए वहां की मिट्टी नर्म अर्थात पोली हो।

इस दृष्टि से रेतीली दोमट मिट्टी जिसमें जलनिकास की पर्याप्त व्यवस्था हों इसकी खेती के लिए सर्वोत्तम मानी जाती हैं यूं तो हल्की कपासिया तथा चिकनी मिट्टी में भी इसे उपजाया जा सकता है। परन्तु ऐसी मिट्टी में रेत आदि का मिश्रण करके इसे इस प्रकार तैयार करना होगा कि यह मिट्टी कंदो को बलपूर्वक बांधे नहीं ताकि उखाड़ने पर कंद क्षतिग्रस्त न हों।

बिजाई की विधिः– सतावर की बिजाई बीजों से भी की जा सकती है तथा पुराने पौधों से प्राप्त होने वाली डिस्क से भी। प्रायः पुराने पौधों की खुदाई करते समय भूमिगत कंदों के साथ–साथ छोटे–छोटे अंकुर भी प्राप्त होते हैं। जिनसे पुनः पौध तैयार की जा सकती हैं इन अंकुरों को मूल पौधों से अलग करके पॉलीथीन बैग्स में लगा दिया जाता है। तथा 25–30 दिन में पॉलीथिन में लगाए गए इन पौध को मुख्य खेत में स्थानान्तरित कर दिया जाता है। वैसे बहुधा बिजाई इसके बीजों से ही की जाती है जिसके लिए इनकी निम्नानुसार नर्सरी बनाई जाना उपयुक्त रहता है।

नर्सरी अथवा पौधशाला बनाने की विधिः– सतावर की व्यावसायिक खेती करने के लिए सर्वप्रथम इसके बीजों से इसकी पौधशाला अथवा नर्सरी तैयार की जाती हैं यदि एक एकड़ के क्षेत्र में खेती करना हो तो लगभग 100 वर्ग फीट की एक पौधशाला बनाई जाती है जिसे खाद आदि डालकर अच्छी प्रकार तैयार कर लिया जाता है। इस पौधाशाला की ऊंचाई सामान्य खेत से लगभग 9 इंच से एक फीट ऊंची होनी चाहिए ताकि बाद में पौधों को उखाड़ कर आसानी से स्थानांतरित किया जा सके। 15 मई के करीब इस पौधशाला में सतावर के 5 किलोग्राम बीज एक एकड़ हेतु छिड़क दिए जाते है। बीज छिड़कने के उपरान्त इन पर गोबर मिश्रित मिट्टी की हल्की परत चढ़ा दी जाती है। ताकि बीज ठीक से ढक जाएं। तदुपरांत पौधशाला की फव्वारे अथवा स्प्रिंकलर्स से हल्की सिंचाई कर दी जाती हैं प्रायः 10 से 15 दिनों में इन बीजों में अंकुरण प्रारंभ हो जाता है। तथा बीजों से अंकुरण का प्रतिशत लगभग 40 प्रतिशत तक रहता हैं जब ये पौधे लगभग 40–45 दिनों के हो जाए तो इन्हें मुख्य खेत में प्रतिरोपित कर दिया जाना चाहिए। नर्सरी अथवा पौधशाला में बीज बोने की जगह इन बीजों को पॉलीथीन की थैलियों में डाल करके भी तैयार किया जा सकता है।

खेत की तैयारीः– सतावर की खेती 24 माह से 40 माह की फसल के रूप में की जाती है इसलिए यह आवश्यक होता है कि प्रारंभ में खेत की अच्छी प्रकार से तैयारी की जाए। इसके लिए मई–जून के महीनें में खेत की गहरी जुताई करके उसमें 2 टन केंचुआ खाद अथवा चार टन कम्पोस्ट खाद के साथ–साथ 15 किलोग्राम बायोनीमा जैविक खाद प्रति एकड़ की दर से खेत में मिला दी जानी चाहिए। यूं तो सतावर की खेती सीधे प्लेन खेत में भी की जा सकती है परन्तु जड़ों के अच्छे विकास के लिए यह वांछित होता है कि खेत की जुताई करने तथा खाद मिला देने से उपरान्त खेत में मेड़ें बना दी जाए। इसके लिए 60–60 सेंमी की दूरी पर 9 इंच ऊँची मेड़ियां बना दी जाती हैं।

सतावर की प्रमुख किस्मेंः– साहित्य में सतावर की कई किस्मों का विवरण मिलता है जिनमें प्रमुख हैं *एस्पेरेगस सारमेन्टोससॉ एस्पेरेगस कुरिलससॉ एस्पेरेगस गोनोक्लैडोससॉ एस्पेरेगस एडसेंडेससॉ स्पेरेगस आफीसीनेलिसॉ एस्पेरेगस प्लुमोससॉ एस्पेरेगस फिलिसिनसॉ एस्पेरेगस स्प्रेन्गेरी* आदि। इनमें से *एस्पेरेगस एडसेन्डेसस* को तो सफेद मूसली के रूप में पहचाना गया है। जबकि *एस्पेरेगस सारमेन्टोसस* महाशतावरी के नाम से जानी जाती है। महाशतावरी की लता अपेक्षाकृत बड़ी होती है तथा इसमें कंद लंबे तथा संख्या में अधिक होते हैं। सतावर की *एस्पेरेगस फिलिसिनस* किस्म कांटा रहित होती है तथा मुख्यतया हिमालयी क्षेत्रों में पाई जाती है। सतावर की एक अन्य किस्म *एस्पेरेगस आफीसीनेलिस* मुख्यतया सूप तथा सलाद बनाने के काम आती है। तथा बड़े शहरों में इसकी अच्छी मांग है। इनमें से औषधीय उपयोग में सतावर की जो किस्म मुख्यतया प्रयुक्त होती है वह है *एस्पेरेगस रेसीमोसस*।

मुख्य खेत में पौधों की रोपाईः– जब नर्सरी में पौध 40–45 दिन की हो जाती है तथा यह 4.5 इंच की ऊँचाई प्राप्त कर लेती है तो इसे इन मेड़ियों पर 60–60 सेंमी की दूरी पर चार–पांच इंच गहरे गड्ढे खोदकर के रोपित कर दिया जाता है। खेत में खाद मिलाने का काम खेत की तैयारी के समय भी किया जा सकता है तथा गड्ढों में पौध की रोपाई के समय भी। पहले वर्ष के उपरान्त आगामी वर्षों में भी प्रतिवर्ष माह जून–जुलाई में 750 किलोग्राम केंचुआ खाद अथवा 1.5 टन कम्पोस्ट खाद तथा 15 किलोग्राम बायोनीमा जैविक खाद प्रति एकड़ डालना उपयोगी रहता है।

आरोहरण की व्यवस्थाः– सतावर एक लता है अतः इसके सही विकास के लिए आवश्यक है कि इसके लिए उपयुक्त आरोहरण की व्यवस्था की जाए। इस कार्य हेतु तो मचान जैसी व्यवस्था भी की जा सकती है परन्तु यह ज्यादा उपयुक्त रहता है यदि प्रत्येक पौधे के पास लकड़ी के सूखे डंठल अथवा बांस के डंडे गाड़ दिए जाऐं ताकि सतावर की लताऐं उन पर चढ़कर सही विस्तार पा सकें।

खरपतवार नियंत्रण तथा निराई–गुड़ाई की व्यवस्थाः– सतावर के पौधों को खरपतवार से मुक्त रखना आवश्यक होता है इसके लिए यह उपयुक्त होता है कि आवश्यकता पड़ने पर नियमित अंतरालों पर हाथ से निराई–गुड़ाई की जाए। इससे एक तरफ जहां खरपतवार पर नियंत्रण होता है वहीं हाथ से निराई. गुड़ाई करने से मिट्टी भी नर्म रहती है जिससे पौधों की जड़ों के प्रसार के लिए उपयुक्त वातावरण भी प्राप्त होता है।

सिंचाई की व्यवस्थाः– सतावर के पौधों को ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। यदि माह में एक बार सिंचाई की व्यवस्था हो सके तो टयूबर्स या जड़ों का अच्छा विकास हो जाता है। सिंचाई प्लावन पद्धति से भी की जा सकती है तथा इसके लिए ड्रिप सिंचाई पद्धति का भी उपयोग किया जा सकता है जिसमें कम पानी की आवश्यकता होती है। सिंचाई देते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि पानी पौधों के पास ज्यादा देर तक रुके नहीं। वैसे कम पानी सतावर की सूखी जड़ अथवा बिना सिंचाई के अर्थात् असिंचित फसल के रूप में भी सतावर की खेती की जा सकती है। हां! ऐसी स्थिति में उत्पादन का प्रभावित होना स्वाभाविक है।

फसल का पकना अथवा फसल की परिपक्वताः– प्रायः लगाने के 24 माह के उपरान्त सतावर की जड़ें खोदने के योग्य हो जाती है। किन्हीं किसानों द्वारा इनकी 40 माह बाद भी खुदाई की जाती है।

जड़ों की खुदाई तथा उपज की प्राप्तिः– 24 से 40 माह की फसल हो जाने पर सतावर की जड़ों की खुदाई कर ली जाती है। खुदाई का उपयुक्त समय अप्रैल–मई माह का होता है जब पौधों पर लगे हुए बीज पक जाएं। ऐसी स्थिति में कुदाली की सहायता से सावधानीपूर्वक जड़ों को खोद लिया जाता है। खुदाई से पहले यदि खेत में हल्की सिंचाई देकर मिट्टी को थोड़ा नर्म बना लिया जाए तो फसल को उखाड़ना आसान हो जाता है। जड़ों को उखाड़ने के उपरान्त उनके ऊपर का छिलका उतार लिया जाता है। ऐसा चीरा लगाकर भी किया जाता सकता है। सतावर की जड़ों के ऊपर पाया जाने वाला छिलका जहरीला होता है अतः इसे टयूबर्स से अलग करना आवश्यक होता है। छिलका उतारने का कार्य टयूबर्स उखाड़ने के तत्काल बाद कर लिया जाना चाहिए अन्यथा यदि टयूबर्स थोड़ी सूख जाऐं तो छिलका उतारना मुश्किल हो जाता है। ऐसी स्थिति में इन्हें पानी में हल्का उबालना पड़ता है तथा तदुपरान्त ठंडे पानी में थोड़ी देर रखने के उपरान्त ही इन्हें छीलना संभव हो पाता है। छीलने के उपरान्त इन्हें छाया में सुखा लिया जाता है। तथा पूर्णतया सूख जाने के उपरान्त बोरियों में पैक करके बिक्री हेतु प्रस्तुत कर दिया जाता है।

कुल उत्पादनः– प्रायः 24 माह की सतावर की फसल से प्रति एकड़ लगभग 25 क्विंटल सूखी जड़ों का उत्पादन प्राप्त होता है।